

Bhāg. P. 5, 18, 9. यत्प्रतापो रिपुस्त्रीणां सनेत्राभ्यां ऽभञ्जन्मुखम् Rāgā-Tar. 3, 478. यादृशं भञ्जते किं स्त्री मुते मूते तथाविधम् M. 9, 9. मिथो भञ्जता प्र-  
सवात्सकृत्सकृदतावृता 70. भञ्जमानां भञ्जस्व माम् MBh. 1, 3869. 5958. 3,  
2163. 5, 3987. 13, 2215. R. 3, 33, 42. 33, 16. Ragh. 12, 34. Kathās. 4, 14.  
44. 10, 145. 37, 209. 42, 162. 49, 50. G3. 116. अतो भञ्जिष्ये समयेन साधो  
यावत्तेजो बिभृषादात्मनो मे Bhāg. P. 3, 22, 19. Pāṇāt. 46, 18 (ed. orn. 53,  
1). Spr. 3271, v. 1. LA. (II) 36, 2. मां भक्तं भञ्जितुमर्हसि MBh. 1, 3260.  
act.: कन्या भञ्जतीमुत्कृष्टं न किंचिदपि दापयेत् M. 8, 365. भञ्जती (so ist  
mit der ed. Bomb. zu lesen) MBh. 1, 3871. भक्तं च भञ्ज माम् 7804. 3,  
1860. 3, 432. मित्रभार्या भञ्जिष्यति Hariv. 11133. R. 6, 8, 23. Bhāg. P. 3,  
21, 28. Suçr. 2, 423, 6. Spr. 2366. Pāṇāt. 44, 20. LA. (II) 37, 8. Kāurap.  
36. — Vgl. भक्त, भक्ति. भञ्जक fgg., भाग. भागिन्. भाञ्ज.  
— caus. भाञ्जयति 1) theilen, dividiren Śrīras. 7, 4. भाञ्जित 1, 50. 2. 65.  
3, 41. भाञ्ज पृथक्कर्मणि Dhātup. 33, 34. — 2) theilhaftig machen, genießen  
lassen: यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाञ्जयेत् नः RV. 10, 9, 2. इमां लोका-  
नूर्वा रसेन भाञ्जयति Cat. Br. 3, 6, 4, 12. द्वे देवान्भाञ्जयत् 14, 4, 2, 1. 3. अवी-  
भञ्जुः 4, 1, 2, 16. भाञ्ज विभ्राणने Dhātup. 33, 60. — 3) hingehen lassen,  
jagen: दिशश्चारीन्भाञ्जयत् jagte in alle Weltgegenden Bhāt. 17, 80. —  
Nach Vor. auch kochen. Vgl. भाजन.  
— अनु verehren: गोविन्दचरणाम्बुजम् — अनुभञ्जन् Bhāg. P. 4, 29,  
82. 9, 17.  
— अप einen Theil abtreten: अयं ते गन्धां सुभगे भञ्जाम RV. 10, 108, 9.  
Cat. Br. 3, 8, 2, 29. श्रेष्ठं पुत्रमपभञ्ज्य abfinden Kāṭy. Çr. 22, 1, 9. abtheilen:  
सोमम् Çāṅkh. Çr. 13, 13, 1. Pāṇāv. Br. 9, 3, 1.  
— अभि sich hinbegeben nach, fliehen: दिशो ऽभ्यभञ्जतां निःशस्त्रौ Ha-  
riv. 16014.  
— आ 1) act., zuweilen auch med., Jmd an Etwas (loc.) Theil neh-  
men —, genießen lassen, Jmd zu Etwas verhelfen; partic. अभक्त par-  
ticeps. RV. 1, 27, 5. आ न इन्द्रे वाजं भञ्ज 43, 8. 104, 6. 121, 15. 2, 38, 1.  
सृतस्य भागे यजमानमाभञ्जत् 1, 136, 5. 164, 8. आ गोमतिं व्रजे भञ्जा त्वं नः  
7, 27, 1. 46, 4. 36, 21. यौ अभञ्जो मरुतं इन्द्रं सेमै 3, 33, 9. 4, 30, 16. 5, 34, 5.  
त्वं सूर्यं न आ भञ्ज lass uns das Sonnenlicht genießen 9, 4, 5. 67, 10. 10,  
112, 10. मा सीमवद्य आ भोक् der Schande anheimfallen lassen 8, 69, 8.  
आ नो भञ्जस्व राधसि 4, 32, 21. AV. 4, 22, 2. 6, 33, 2. आ मा सुचरिते भञ्ज  
VS. 4, 28, 17, 54. कृतेमानस्मिन्नुक्त्य अभञ्जा इति तनितस्मिन्नुक्त्य अभञ्जत्  
Ait. Br. 3, 20, 29. 4, 19. Ait. Up. 3, 5 (wo वा für वा zu lesen ist). Āçv.  
Çr. 1, 2. Cat. Br. 1, 3, 2, 4. 6, 2, 1. अभक्तो ह वै तस्यां पुण्यकृत्यायां भ-  
वति 8, 4, 1, 2. 12, 13, 8, 1, 6. — 2) verehren: अद्यभञ्जे वाङ्मिस्तपूषोत्तमं  
गुणालयं पञ्चकरं लालसः Bhāg. P. 4, 20, 27. — Vgl. अभग. — caus.  
अभाञ्जयस्व zur Erklärung von अभञ्जस्व Çāṅk. zu Bāh. Ār. Up. 1, 3, 18.  
— अन्वा nach oder neben Jmd Theil nehmen —, mit ankommen las-  
sen: अन्वाभक्त mitbetheiligt. Cat. Br. 1, 2, 5, 4. 3, 2, 4. 6, 2, 18. 7, 3, 7. 2,  
3, 4, 20. यत्र वै तत्रमुज्जयत्यन्वाभक्ता वै तत्र विद् 4, 2, 6. 3, 4, 2, 8. 6, 2, 26.  
9, 4, 9. 13, 5, 4, 21. Ait. Br. 6, 12. TS. 6, 4, 2. TBr. 2, 1, 2, 4. med.: अनु  
नो ऽस्मिन्न अभञ्जस्व Cat. Br. 14, 4, 2, 19. तदेनानिन्द्रः सोमपिथे ऽन्वा-  
भञ्जे Çāṅkh. Çr. 14, 62, 2.  
— उप einnehmen, in Besitz kommen: उप त्रितस्य पाप्योऽर्भक्तं यदु-  
क्ता पदम् RV. 9, 102, 2.

— निम् nicht Theil nehmen lassen an, ausschliessen von (abl.): abfin-  
den mit (instr.): इन्द्रं मा वो वसेनिर्भीक् RV. 8, 70, 6. 9, 72, 8. पृथिव्यास्तं  
निर्भञ्जामः AV. 10, 3, 25. 4, 22, 2. 2, 33, 2. TS. 2, 6, 4, 1. Cat. Br. 1, 3, 4, 11.  
9, 2, 35. 2, 1, 4, 9. 11, 3, 2, 5. 7, 2, 2. तुषे रतांसि निर्भञ्जन् Ait. Br. 2, 7.  
नाभानेदिष्टं धातरो निर्भञ्जन् schlossen ihn bei der Erbtheilung aus 3, 14.  
— निर्भञ्जति R. 5, 73, 37 fehlerhaft für निर्भञ्जति. — caus. Jmd aus-  
schliessen von der Erbschaft, enterben Kāṭy. in Dā. 93. — Vgl. निर्भाञ्ज.  
— परि theilen: आत्मानं परिभञ्ज्य MBh. 7, 1279.  
— प्र 1) ausführen, vollführen: अमुमेव रमापुरःसरं प्रभञ्ज्यो मनुजो विधिं  
बुधः Pāṇāt. 3, 2, 15. जपकोमार्चनध्यानैर्या ऽमुं प्रभञ्जते मनुम् 15, 47. —  
2) verehren Āçokāvad. 3, 9. — Vgl. प्रभाग (wo भञ्ज st. भञ्ज zu lesen ist)  
und प्रभाञ्ज.

— प्रति wieder Jmd (acc.) zu Theil werden. — zufallen: चर्मरत्नं च  
धनमित्रमेव प्रतिभञ्जिष्यति Daçak. in Benf. Chr. 193, 6. प्रतिभञ्जति MBh.  
12, 11290 fehlerhaft für प्रविभञ्जति, wie die ed. Bomb. hat. — Vgl. प्र-  
तिभाग.

— वि 1) vertheilen, zutheilen: प्रजायः पुष्टिं विभञ्जत आसते RV. 2, 13.  
4, 24, 14. यज्वेदयज्यार्वि भञ्जाति भोजनम् 26, 1, 10, 48, 1. 4, 81, 6. 103, 6. 4,  
34, 1. व्यनवस्य तत्सर्वं गायं भाक् 7, 18, 13, 24. VS. 7, 45. Ait. Br. 3, 13, 7.  
1. तौ विभाजं नार्शक्रात् TBr. 1, 1, 5, 6. TS. 3, 1, 2, 4. 6, 1, 2, 2. विभञ्जन्दायं  
पित्र्यम् M. 9, 164. MBh. 13, 7322. पृथदिच्छति तत्सर्वं लभते (भञ्जते ed.  
Bomb. विभञ्जति च 14, 1035. अविभञ्ज्य परत्र तं मया सहितः पास्यति  
Kumāras. 4, 27. Pāṇāt. 64, 2. समं विभञ्ज्य gleich vertheilend Kāṭy. Çr.  
2, 4, 34. विभञ्ज्य तनयेभ्यः क्षाम् Bhāg. P. 4, 28, 33. विभक्तं व्यभञ्जतस्मै 9,  
21, 7. तं नृप्रशकलीकृतं कृती पत्रिणा व्यभञ्जत् Ragh. 11, 29. Spr. 4393.  
(राज्यम्, विभञ्ज्य बन्धुभृत्येषु Rāgā-Tar. 3, 21. med. RV. 10, 84, 2. मनुः पुत्रे-  
भ्यो दायं व्यभञ्जत P. 8, 3, 53, Sch. MBh. 14, 2667. स तेनो वैल्लवं पत्न्यो-  
र्विभञ्जे Ragh. 10, 55. Bhāg. P. 8, 9, 12. स्थानेषु चार्चिष्मतीः संध्यामङ्गलदीपि-  
का विभञ्जते Vikr. 43. mit dem acc. der Person und instr. oder acc. der  
Sache: स्वेच्छया विभञ्जतुमान्। श्रेष्ठं वा श्रेष्ठभागेन Jāṣ. 2, 114. यं तत्  
धातरः — व्यभञ्जन्दायम् Bhāg. P. 9, 4, 1. न च पित्रा विभञ्जते पुत्राः der  
Vater vertheilt nicht sein Vermögen unter die Söhne MBh. 1, 2344. un-  
ter sich vertheilen: med.: वि ये ते अग्रे भोजिरे अनीकम् RV. 7, 1, 9. 32, 7.  
8, 40, 8. 10, 108, 8. AV. 3, 29, 1. श्रेष्ठया वेदांसि शतशो वि भञ्जामहे 6, 60, 3.  
10, 7, 27. Ait. Br. 3, 24. देवमनुष्या दिशो व्यभञ्जत TS. 6, 1, 4, 1. Cat. Br.  
1, 2, 3, 2. 11, 6, 4, 3. 14, 1, 2, 15. सोदर्या विभञ्जेरस्तं (भागं) समेत्य सहिताः  
समम् M. 9, 212. Jāṣ. 2, 417. 126. विभञ्जधं यमून् MBh. 9, 2322. 14, 2655.  
Hariv. 11148. Bhāg. P. 9, 20, 26. सिंहासनानि भूरीणि विचित्राणि वि-  
भञ्जते MBh. 2, 2053. नक्तदिनं विभञ्ज्येभौ शीतोष्णकिरणाविव Mālav. 88.  
दिशश्चतस्रो विभञ्ज्य वि भञ्ज्य v. 1. पार्या मृगायां प्रयाताः MBh. 3, 15607. वि-  
भञ्जते स तैः सह er theile mit ihnen M. 9, 216. act.: विदीम्। खण्डशस्त-  
दा व्यभञ्जन् MBh. 3, 10208. सर्वं तद्यभञ्जन् 14, 2668. R. 5, 23, 49. तौ तदी-  
यस्याग्रकारादिरुधर्मयं विभञ्जतुः sie theilten zur Hälfte Kathās. 20, 19.  
theilen, zertheilen, scheiden: व्यभञ्जत पेशीम् theilte, zertheilte MBh. 1,  
4536. med. Suçr. 1, 328, 21. विभञ्ज्य चाप्यनोकानि 1, 985. व्यभञ्जतान्यनो-  
कानि दश चैकं च 3, 5243. विभञ्जात्मानम् VP. bei Muir, ST. 4, 331. Bhāg.  
P. 2, 9, 29. Mahidh. zu VS. 3, 15. पञ्चधात्मानं विभञ्ज्य Maitrāj. 2, 6, 6, 26.  
MBh. 14, 2665. Hariv. 969. R. Gorr. 1, 14, 30. Prab. 18, 6. Vedāntas.